बच्चे अखबार पढ़ते हैं। आजकल योग के सम्बंध में अखबारों में बहुत पढ़ता (पड़ता) है। महाऋषि बनिस्पत लेटरस टू बी एडीटर्स बहुत पढ़ते हैं। तो कोई अखबार में जवाब भी दे सकते हैं अपने ही नाम से ;क्योंकि कोई2 ब्र.कु. के नाम से भी डालते हैं। बच्चों को यह तो मालूम ही है कि हठयोगी तो बहुत हैं। राजयोग तो सिर्फ तुम बच्चे ही सीखते हो। उनसे पूछना चाहिए कि योग तो दो प्रकार के होते हैं। हठयोग और राजयोग। यह महाऋषि आदि कौन सा योग सिखाते हैं। हठयोगी तो कभी भी राजयोग सिखला ना सकते हैं। राजयोग तो सिवाय साकार के और कोई भी सिखला ना सके। तो यह कौन सा योग सिखलाते हैं, यह तुम लिख सकते हो। वो है घर बाहर(बार) छुड़ाने वाले और वो है हद का सन्यास। भगवान का है बेहद का सन्यास। यह तो बहुत ही सहज बात है ना। बहुत लिखते हैं फिर दूसरा जवाब देते हैं। यहां पर भी अगर कोई सेंसिबुल बच्चा हो तो लिखकर भेज सकते हैं। बाबा डायरैक्शन तो देते हैं ना। ना की हालत में कहेंगे तो नानसेंसिबुल। आजकल तो भाषा के उपर भी चलता रहता है। कहते हैं कि थोड़े रोज में हिंदी भाषा कर ही देंगे। इस पर भी लिखना चाहिए। एक भाषा तो जब ही होगी जबकि एक राज्य और एक ही धर्म हो। भारत में अब तो अनेक ही धर्म हैं। अनेक भाषायें भी हैं। एक भाषा तो कभी भी हो ना सके। एक भाषा और एक राज्य तथा एक धर्म की स्थापना हो ही रही है। यह खुशखबरी सुनानी होती है। गवर्मेंट को लिखो या जो अखबार में डालते हैं उनको भी लिख सकते हो कि खातरी करो कि 9वर्ष में एक ही राज्य की स्थापना हो रही है। फिर यह ना अनेक धर्म होंगे ,ना ही अनेक भाषायें ही होंगी। ऐसे2 डालने से फिर तुम्हारा नाम बहुत ही निकलेगा। कुछ ना कुछ तो लिखते ही रहना चाहिए। जिससे कि बाप भी समझे कि बच्चों को ध्यान है सर्विस की तरफ। किसको रेसपान करना यह भी एक प्रकार का .....है। बाप की श्रीमत तो मिलती है। 9वर्ष के अंदर एक मत ,एक धर्म और एक भाषा हो जाएगी। वहां हिंदी भी नहीं होगी। वहां तो डीटी सावरेंटी की ही जो भाषा होगी वो ही चलेगी। हिंदी भाषा तो कोई कायदे मुजब है नहीं। भाषा तो होनी चाहिए भारती। इसलिए नाम तो भारत है ना। ना कि हिंदुस्तान। ऐसी2 बहुत बातें अखबार में डालते हैं। कहते हैं कि इतने वर्ष अंदर–बाहर से अन्न नहीं मिलेगा। इस पर भी लिखना चाहिए। ड्रामाप्लेनअनुसार गीता के कैनन अनुसार ही विनाश होना है। फैमेन तो पड़ना ही है। नैचुरल कैलेमिटीज तो आनी ही हैं। विनाश तो सामने खड़ा है। सिर्फ बॉम्ब्स से ही विनाश नहीं होगा ;परंतु नैचुरल कैलेमिटीज फेमेन भी आनी ही है। 9वर्ष में यह सारा विनाश हो फिर एक राज्य ,एक धर्म और एक भाषा हो जावेगी। बाबा ने यह भी समझाया है कि प्रभात फेरी में तुम यह ल.ना. का चित्र भी लेकर जावे। पेंट किया हुआ चित्र भी ठीक है। तुम समझाय सकेंगे कि यह राज्य था। ड्रामा अनुसार फिर यह स्थापना हो रही है। ब्रह्मा द्वारा स्थापना और शंकर द्वारा विनाश भी लिखा हुआ है। सारा दिन सर्विस का ही खयाल चलना चाहिए। मनुष्यों को जगाना तो है ना। भक्तिमार्ग की नींद में सोये पड़े हैं। ज्ञान तो है ही सिर्फ तुम्हारे पास। ज्ञान तो ब्राह्मणों में ही होता है, जो फिर देवता बन जाते हैं तो ज्ञान तो प्रायःलोप हो जाता है। यह चित्र ल.ना. का वीकली में भी डाल सकते हैं रंगीन। शोभा भी तो होगा और इनमें नालेज भी क्लीयर है। अच्छा।

13.12.67 रात्रीक्लास– मीठी2 बातें सुनकर ऐसा मीठा बनना है जो सबको प्यारा लगे। जो सुनते है। और जो सुनाते हैं। जिसके पास जो होगा वो ही देगा। तुम्हारे पास अगर रत्न है तो रत्न देंगे। दुनियां में तो है ही भित्तर–ठिक्कर। तो वो तो वही ही देंगे। जिनको ज्ञान है उनके घर में ही शांति रहती है। कमाई भी करते हैं ना। बाप तो आये ही हैं कमाई कराने। बच्चे भी समझते हैं कि बाबा इतनी कमाई कराते हैं। इनका एडवांटेज ऐसा लेवें जो सदैव ही सुखी बने और विश्व का मालिक बने। जो मेहनत करेंगे वो ही इतना पद पावेंगे। अच्छा, मीठे2 सिकीलधे रुहानी बच्चों को रुहानी बाप वा दादा का यादप्यार और गुडनाइट। ओमशांति।